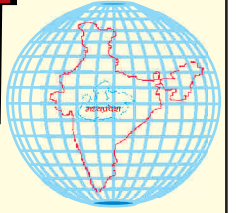




# बरली की दुनिया



बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

“मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।”

वर्ष —3

अंक 28

जून 2009

मूल्य: 5 रु.

## विश्व पर्यावरण विषेषांक आइए मिल-जुलकर जलवायु बदलाव के खतरों से बचें

हमारी नानी-दादी के समय में हर मौसम के अपने मजे होते थे। बरसात होती थी तो छतरी लेकर घूमने और कागज की नाव चलाने में बड़ा मजा आता था। ठंड में गुदड़ी में छुप जाने और आंगन में बैठकर धूप सेकने का अपना मजा था। गर्मी में खेत की मेड़ पर सुस्ताकर कुएँ का ठंडा पानी अमृत जैसा लगता था। पर आज ये सब कहाँ रहा? अब सभी मौसम बेमौसम हो गए हैं। उसका कारण है हम सभी ने धरती, पेड़-पौधों और पानी की ऐसी बर्बादी की है कि हमें उसका नतीजा भुगतना पड़ रहा है। हमारी इस लापरवाही से आने वाले दिनों में हमें और ज्यादा खराब दिन देखने पड़ेंगे। हमने जंगल, जमीन, पानी और मिट्टी को ऐसा बिगाड़ा है कि धरती को बुखार चढ़ गया है। वह दिनोंदिन बहुत गर्म होती जा रही है। हमारे खेत-खलिहानों, गली-मोहल्लों, ओटलों-चौपालों से लेकर शहरों तक गर्मी बढ़ गई है। जाने-अनजाने में हमने प्रकृति को खूब बिगाड़ा है और यह जलवायु बदलाव के खतरे इसी का नतीजा है। विश्व पर्यावरण दिवस पर बरली की दुनिया के इस विषेष अंक से जानें और समझे कि मिलजुलकर जलवायु बदलाव के

खतरे क्या हैं? इनसे कैसे बचे? फिर इस दिशा में कुछ करे कि इस समस्या से हम मिलजुलकर कैसे बच सकते हैं।

### जलवायु में बदलाव

यदि हम अपने घर या गाँव के बड़े-बूढ़ों के साथ बैठें तो हमें नई बातें मालूम पड़ती हैं। उनसे फसल, पानी और मिट्टी के बारे में बात करें तो हमें पता चलेगा कि पिछले 25-30 सालों में पर्यावरण में कितना बदलाव आ गया है। इन बीते सालों में जलवायु बहुत बदल गई है। कई लोग मौसम को ही जलवायु समझ लेते हैं लेकिन दोनों में बहुत अंतर है। देखा जाए तो एक साल में मुख्य रूप से चार मौसम हैं गर्मी, बरसात, सर्दी, बसंत। किसी भी क्षेत्र में लगभग 30 साल के मौसम की जानकारी लेने के बाद वहाँ के हवा, पानी, धूप और ठंड सभी कुल मिलाकर कैसे रहते हैं उसे जलवायु कहते



है। जहाँ की जैसी जलवायु होती है उस क्षेत्र को वैसा ही कहा जाता है जैसे ठंडे क्षेत्र, गर्म क्षेत्र आदि। ज्यादा महीने लगातार ठंड पड़ने वाले प्रदेशों को ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र कहते हैं। बढ़ती गर्मी, कम होती बरसात, कहीं सूखा तो कहीं बाढ़, यह सभी जलवायु बदलाव के कारण हैं। पुराने समय में बरसात खूब होती थी और समय पर होती थी।

आज-कल खूटी में टंगी हुई छतरी गीली होने की आस में वही टंगी रह जाती है। बादल बरसते तो हैं पर टापरे के कवेलू से पानी टपकता भी नहीं कि हवा बादलों को उड़ा कर ले जाती है। ठंड में पहले इतनी ठंड पड़ती थी कि सभी को कंबल और षाल ओढ़नी पड़ती थी। पर अब स्वेटर लेने दुकान तक जाओ तब तक तो ठंड भाग जाती है। इसी तरह पुराने जमाने में लोग गर्मी में सुबह खेतों में ठंडी हवा खाने जाते थे, दोपहर में आम खाते और रात को खुली हवा में सो जाते थे। पर आजकल गर्मी में इतनी जानलेवा गर्मी होती है कि हम न बाहर घूम सकते हैं और न रात को बाहर सो सकते हैं क्योंकि बहुत देर रात तक गर्मी रहती है। मौसम में ऐसा बदलाव इसलिए आया है क्योंकि हमने पेड़-पौधों, धरती और पानी को बरबाद कर दिया है। आइए जानते हैं कि यह बदलाव कैसे आया?

### जलवायु में बदलाव का कारण : कार्बन

हम सब जाने-अनजाने में पर्यावरण बिगड़ रहे हैं। जिससे कार्बन बढ़ रहा है। हम जो साँस छोड़ते हैं उसे कार्बन डाइऑक्साइड गैस कहते हैं। इसको पेड़-पौधे सोख लेते हैं और हमें ऑक्सीजन देते हैं। ऑक्सीजन हवा को साफ रखती है जिससे हम जिन्दा रहते हैं इसलिए इसे प्राणवायु भी कहते हैं। लकड़ी, कोयला, कंडे, पेट्रोल और डीजल के जलने से जो धुआँ निकलता है उसी से कार्बन डाइऑक्साइड गैस बन जाती है। इस तरह कार्बन गैसों मिलकर ग्रीन हाउस गैसें बनाती हैं। यह ग्रीन हाउस सूरज की गर्मी को सोख लेता है जिससे धरती का तापमान बढ़ जाता है। इस समय पूरी दुनिया खतरनाक कार्बन की शिकार है। दुनिया के सभी विकसित देश मशीनों में बड़ी मात्रा में तेल और कोयले का उपयोग कर रहे हैं। इस कारण कार्बन बहुत तेजी से बढ़ रहा है और वातावरण दूषित होता जा रहा है। इसके बुरे परिणामों से कोई भी नहीं बच पाया है। जलवायु और मौसम पर इसका असर हो रहा है। पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। कागज बनाने, खेती करने लायक जमीन को बनाने, जानवरों के लिए चारागाह बनाने, बगीचे बनाने और खाना बनाने के लिए और दूसरी जरूरतों को पूरी करने के लिए हम जंगलों को काट रहे हैं। एक तरफ कार्बन को सोख लेने वाले पेड़ कम होते जा रहे हैं और दूसरी तरफ कार्बन बहुत बढ़ रहा है। इससे धरती गर्म हो रही है, बर्फ पिघल रही है, उपजाऊ जमीन रेगिस्तान में बदल रही है और समुद्र के आसपास बसे लोगों के लिए बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है। दुनिया में कहीं बहुत अधिक सर्दी पड़ रही है तो कहीं बहुत अधिक गर्मी। कहीं ज्यादा बारिश हो रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है। पर्यावरण के बिगड़ने से इस तरह मौसम में बदलाव हो रहा है। इस सब का हमारे जीवन पर गलत असर पड़ रहा है और इसके परिणाम भी हमें भुगतने होंगे। मौसम में बदलाव के कारण आज अनाज की कीमतें

लगातार बढ़ रही हैं। इसका सबसे बड़ा असर गरीब इंसान पर हो रहा है। पर्यावरण को बचाने और गरीबी को कम करने के लिए हमें कार्बन को बढ़ाने वाली आदतों में बदलाव करना होगा। समय आ गया है कि दुनिया भर के देश, शहर, गाँव, संगठन, व्यापार से जुड़े संस्थान, सभी व्यक्ति और समूह मिलकर कार्बन कम करें। सूर्य की गरमी, हवा व पानी से ही हमें ऐसे ऊर्जा के साधन बनाने होंगे जो कार्बन को कम कर सकें। अपनी आदतों को बदल कर हम कार्बन को कम कर सकते हैं।

### कार्बन बढ़ने के कारण

कार्बन बाहर से नहीं आता है। हम ही इसे बढ़ाते हैं। नीचे दिए गए कारणों से कार्बन बढ़ता है।

जनसंख्या बढ़ने से

पेड़ काटने से

पेट्रोल, डीजल व कोयले से गाड़ीया, फैक्ट्रीया, जहाज चलाने से

खाना बनाने के लिए लकड़ी या गोबर के कंडे को जलाने से

बीड़ी, सिगरेट, चिलम-हुक्का, गाँजा पीने से

पुराने टायर, वायर, प्लास्टिक व रबर से बनी चीजों को जलाने से

चूल्हों, भट्टियों व कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से

कूड़ा-कचरा जलाने से

गंदगी की गैस से

फैक्टरियों व घरों से निकलने वाली गंदगी, कूड़ा-कचरा नदियों, नहरों और तालाबों में बहा देने से पानी में कार्बन मिल जाता है।

खेतों में रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से मिट्टी में कार्बन बढ़ जाता है।

### जलवायु बदलाव के खतरे

यदि इसी तरह कार्बन बढ़ता रहा और जलवायु बदलती रही तो हम सभी के जीवन को खतरा है। हमारी आज की जरा सी



लापरवाही कल बड़ी विनाश का कारण बनेगी। जलवायु के

बदलाव से खतरे हैं।

### पानी और अनाज का संकट

भारत में कृषि क्षेत्र का राष्ट्रीय उत्पादन में 35 प्रतिशत का योगदान है लेकिन आने वाले दिनों में जलवायु बदलाव के कारण पानी और फसल में भंगकर कमी के कारण भूखमरी व कुपोषण बढ़ सकता है। क्योंकि चावल और गेहूँ कम होगा। लोगों को खाने के लिए अनाज, पीने के लिए पानी भी नहीं मिलेगा। हम सभी जानते हैं कि पानी से बिजली बनती है लेकिन जब पानी ही खत्म हो जाएगा तो बिजली कैसे बनेगी? आजकल तो बिजली के बिना कोई काम नहीं होता। हर काम बिजली से किया जाता है। बिजली नहीं मिलेगी तो सभी कामकाज बन्द हो जाएगा।

### समुद्रों में पानी का स्तर बढ़ेगा

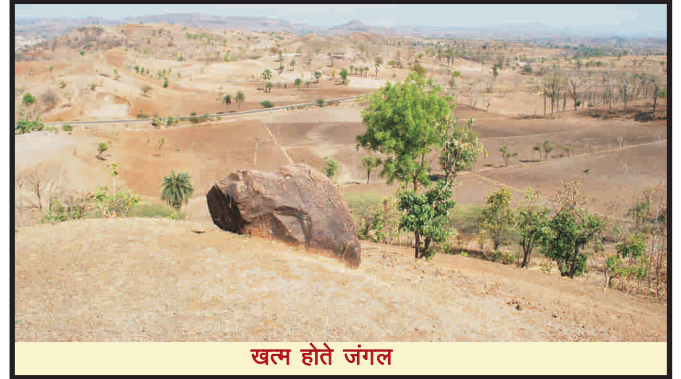
जहां पर बर्फ ही बर्फ होती है उसे हिमनद कहते हैं। हिमालय के हिमनदों से लगातार बर्फ पिघल रही है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार हिमनद में हर साल जितनी बर्फ जमा होनी चाहिए उतनी नहीं हो रही है क्योंकि लगातार बर्फ पिघल रही है और यह समुद्रों के लिए बहुत ही खतरनाक है। समुद्री पानी का स्तर बढ़ने पर अनेक इलाके डूब जाएंगे। इसके अलावा सूनामी जैसे तूफान में जान-माल को बहुत खतरा हो सकता है।

### बीमारियाँ फैलेंगी

पीने के पानी में कार्बन बढ़ने से हैजा, दस्त, पेचिश, पीलिया जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं। खाना बनाते समय चूल्हे से निकलने वाले धुएँ में कार्बन के कारण आँखों, गले, फेफड़े और चमड़ी की बीमारियाँ हो जाती हैं। आँखों में जलन होती है, खोंसी आती है, साँस फूलती है व खुजली की बीमारी होती है। जलवायु बदलाव के कारण देश भर में मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ बढ़ेंगी क्योंकि तापमान में बदलाव से मच्छर ज्यादा पैदा होते हैं। भारत में पिछले दस सालों के दौरान हर साल मलेरिया के लगभग 20 लाख मामले सामने आए हैं। भारत के कुछ इलाकों में डीडीटी दवा असर नहीं कर रही है। मलेरिया फैलाने वाले मच्छर अब पुरानी दवाओं से भी नहीं मरते हैं। इसके अलावा पीने के साफ पानी की कमी और कुपोषण के कारण बीमारियाँ और अधिक फैलेंगी। सब दूर कुपोषण फैल जाएगा। समुद्र के किनारों पर पानी का तापमान बढ़ने से हैजा फेलेगा और गर्मी से भी मौतें होंगी। रासायनिक खाद डालने से जमीन में धीरे-धीरे पैदावार कम हो जाएगी और जो अनाज पैदा होगा उससे भी बीमारियाँ बढ़ेंगी। वैज्ञानिकों के अंदाज से जलवायु बदलाव के कारण अगले 20 सालों में भारत के 25 प्रतिशत जीव-जन्तु और वनस्पति खत्म हो सकते हैं। जंगल, हवा, पानी और मिट्टी में जिस तरह से जहर घुल रही है। से भारत में पाए जाने वाले अनेक दुर्लभ पशु-पक्षी भी कम हो जाने का खतरा है।

### मैदानी इलाकों में समस्या बढ़ेगी

धरती का तापमान बढ़ने से मैदानी इलाकों में बारिश और सर्दी के मौसम का समय कम हो जाएगा जिससे पानी की कमी हो जाएगी। चारागाह छोटे हो जाएंगे और इंसान के साथ-साथ गाय, बैल, भैस को भी जब खाने को नहीं मिलेगा तो उनका जीवन भी खतरे में हो जाएंगे। बेमौसम और कम ज्यादा



खत्म होते जंगल

बारिश और ठंड से जंगल खत्म हो जाएंगे और जंगली जीव-जन्तुओं के जीवन को भी बहुत खतरा है क्योंकि हमजंगल भी खत्म कर रहे हैं।

### पर्यावरण खराब होगा

जलते हुए प्लास्टिक के धुएँ से पेड़-पौधे, पानी, मिट्टी सभी को नुकसान पहुँचता है। नदियों, नहरों, झीलों और मिट्टी में प्लास्टिक की थैलियाँ जब सालों पड़ी रहती हैं और सड़ती नहीं हैं तो नालियाँ तथा गटर रूक जाते हैं और पानी चारों ओर फैल जाता है। इससे कई बीमारियाँ होती हैं। मिट्टी के नीचे जब प्लास्टिक की पन्थियाँ जम जाती हैं तो पानी जमीन के अंदर नहीं जा पाता और पेड़-पौधे की जड़ जमीन के नीचे नहीं पहुँच पाती जिससे पेड़-पौधों को पानी नहीं मिलता इस तरह से सारा पर्यावरण खराब हो जाएगा।

### जलवायु बदलाव के खतरों से बचने के उपाय

जलवायु बदलाव के खतरों से अभी भी बचा जा सकता है। सबसे जरूरी है मिलजुलकर काम करना। युग अवतार बहाउल्लाह ने अपनी पवित्र पुस्तक निगूढ़ वचन में लिखा है कि "तुम एक ही वृक्ष के फल तथा एक ही शाखा के पत्ते हो" और वह कहते हैं "तुम एक हाथ की उंगलियों तथा एक शरीर के अंगों के भाँति बनो।" कहने का मतलब है कि पर्यावरण को बचाने के लिए हम एकता से संतुलन बनाकर रखेंगे तभी हम कुछ हद तक पर्यावरण को बचा सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि "यह धरती हरेक की जरूरतें तो पूरी कर सकती है लेकिन किसी एक के लालच को नहीं।" बहाई लेखों में लिखा है "सारे लालच को निकाल फेंको और संतोष की कामना करो, क्योंकि लालची दुखी रहता है और संतोषी हमेशा सबका प्रिय रहता है।" मतलब है कि हम सभी को लालच को अपने अंदर से निकालकर फेंक देना चाहिए और जो हमारे पास है उसमें खुश रहना चाहिए क्योंकि लालची इंसान हमेशा धोखा खाता है। ईश्वर ने जानवर, जंगल, खेत,

पानी, लोहा, मिट्टी और चूना हमारे विकास के लिए बनाया है। हमें चाहिए कि इन सभी को संभालें, इनको खत्म न होने दें। इनकी देखभाल करें। इनको बचाएं और इनका विकास करें क्योंकि ईश्वर ने हमें सबसे ज्यादा सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति दी है ताकि हम सही और गलत को पहचान कर सही रास्ते पर चल सकें और दूसरों को भी साथ लेकर चलें। इसलिए यह जरूरी है कि हम समझ लें और अभी भी अपनी आदतें बदलें जिससे हमारा पर्यावरण बच सके। इसी में हम सभी की भलाई है। आइए हम सभी नीचे लिखे संकल्प लें :

### **पेड़-पौधे लगाएं**

त्योहार, जन्मदिन, शादी की सालगिरह, रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस पर हमें पेड़-पौधे लगाने चाहिए और उनको बड़ा करने की भी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। यदि कोई एक पेड़ काटना भी पड़े तो उसके बदले दो पेड़ लगाने और उन्हें पालने की आदत डालनी चाहिए।

### **बिजली बचाएं**

सीएफएल के बल्ब लगाने से बिजली कम लगती है। जब काम हो जाए लाइट, पंखें सभी बंद कर दें। इससे बिजली भी बचेगी, पैसे भी बचेंगे और कार्बन भी कम होगी।

### **सूखी व गिरी हुई लकड़ी लें**

खाना बनाने और जलाने के लिए हरे पेड़ काटने के बजाए सूखी और गिरी हुई लकड़ी काम में लेनी चाहिए।

### **आसपास साफ-सफाई रखें**

घरों के आसपास कचरा और गंदगी इकट्ठी होने से हवा में कार्बन पैदा होता है। इसलिए अपने घरों के आसपास साफ-सफाई रखना चाहिए।

### **जैविक खेती करें**

जैविक खेती का मतलब है प्राकृतिक तरीके से खेती करना। फसलों की सिंचाई के लिए स्प्रींकलर का इस्तेमाल करें। कम पानी की आवश्यकता वाली फसल उगाएं। फसलों के लिए केंचुओं, गोबर, गोमूत्र, सब्जियों, फलों के छिलकों व खेत के ही कचरे से बनाई खाद का उपयोग करना चाहिए। यह खाद फसलों के लिए बहुत अच्छी रहती है। कचरे को जलाएं नहीं।

### **पानी का फिर से उपयोग करें**

बरसात के पानी को रोकना चाहिए, उसे बेकार नहीं बहने देना चाहिए। बरसात के पानी को पालाबन्दी करके या कुएं के पास एक गड्ढा कर उसमें रेत, मिट्टी, पत्थर भरकर इकट्ठा करके रखना चाहिए। बाद में इस पानी को हम जरूरत के अनुसार खेतों में उपयोग कर सकते हैं। इससे धरती में पानी का स्तर ऊपर आ जाता है। इसके अलावा घरों में पानी का उपयोग सही तरीके से करें। जैसे रसोई घर, शौचालय, बर्तन साफ करने और खाना पकाने के बाद पानी को जहाँ सही हो उपयोग करें। घर के छोटे-छोटे काम जैसे सब्जी को एक बर्तन में पानी लेकर धोने के बाद

उस पानी को पेड़-पौधों में डालना चाहिए। पर्यावरण इंसान के विकास के लिए है इसलिए हमें पर्यावरण को बचाना चाहिए।

### **रद्दी कागज का उपयोग करें**

रद्दी कागज व सूखे पत्तों को पानी में गलाकर उसमें घास फूस मिलाकर कंड़े बनाए जा सकते हैं। इन कंड़ों को जलाने से धुआँ नहीं के बराबर होता है।

### **कपड़े की थैली लेकर बाजार जाएं**

हमें प्लास्टिक की पन्नियों का उपयोग कम करना चाहिए। जब भी हम बाजार जाएं तो अपनी कपड़े की थैली लेकर जाना चाहिए। दुकानदार प्लास्टिक की पन्नी में सामान भर कर दे तो मना कर देना चाहिए लेकिन नमक, दूध तो पन्नी में आता है। ऐसी प्लास्टिक की पन्नियों को इकट्ठा कर ऐसे लोगों को दे देना चाहिए जो प्लास्टिक का सामान बनाने वाली फैक्ट्रियों को बेचते हैं।

### **सोलर कुकर / लालटेन / ड्रायर का उपयोग करें**

भारत के ज्यादातर भागों में साल में 300 दिन यानी 10 महीने धूप रहती है। इसलिए हमें सूर्य की गर्मी का उपयोग करना चाहिए। सोलर चूल्हे का उपयोग खाना बनाने, सोलर लालटेन का उपयोग बिजली की जगह और सोलर ड्रायर का उपयोग सब्जियाँ, मसाले आदि सूखाने में कर सकते हैं। इससे लकड़ी, गैस और बिजली की खपत कम होगी और साथ ही कार्बन कम होगा।

### **गोबर या बायो गैस का उपयोग करें**

गाँव में सभी लोग गोबर गैस बनाकर उस पर खाना बना सकते हैं। इसी तरह से शहर के लोग बायो गैस शौचालय या जैविक कचरे जिसमें फल के छिलके, कटी सब्जियों का कचरा, घास-चारा आदि को गोबर की जगह उपयोग कर बायो गैस बनाकर उपयोग कर सकते हैं। यह कचरा एक बार उपयोग में आने के बाद खाद बन जाता है जो खेती के काम में आता है। इससे कचरे का सही निपटारा होगा।

### **पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों को चलाने की बचत करें**

हवा में सबसे ज्यादा कार्बन वाहनों के धुएँ से फैलता है। पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों का उपयोग कम करके हम कार्बन कम कर सकते हैं। यदि कहीं आसपास जाना हो तो बैलगाड़ी, तांगा, घोड़ागाड़ी, पैदल, साईकिल या साईकल रिक्शा से जा सकते हैं। जहाँ जरूरी हो मिलकर जाए या दो की जगह एक गाड़ी में जाए। हर तरह सोचे की कैसे कार्बन कम करें।

### **बेकार चीजों से उपयोगी चीजें बनाएं**

बहुत बार घरों में, आफिस में बहुत सी चीजें बेकार हो जाती हैं जिसका उपयोग कर हम सजावटी व उपयोगी चीजें बना सकते हैं। जैसे दिवार घड़ी, पुरानी टार्च, रिमोट में से निकले बैटरियों को एक छोटे थैली में भरकर पेपर वेट बना सकते हैं। जन्म दिन पर मिले ग्रेटिंग कार्ड्स, शादियों के निमंत्रण

कार्ड्स का उपयोग बुक मार्क्स बनाने के लिए कर सकते हैं। चावल, आटे आदि की बोरियों पर ऊन से कढ़ाई कर बैग या थैला बना सकते हैं या बोरों को बैठने या बिछाने के लिए काम में ले सकते हैं। कटाई-सिलाई से बचे हुए कपड़े के छोटे टुकड़े का उपयोग कर मोबाइल फोन रखने की थैली, छोटे बटुएं, छोटे पर्स, चाय के ग्लास कवर्स व बहुत छोटे टुकड़ों से छोटी-छोटी चिड़िया बनाकर उसके लटकन या झूमर बनाकर घर की सजावट कर सकते हैं। ऊपर दिये हुए तरीकों को अपनाकर हम कार्बन कम करके पर्यावरण को साफ व स्वच्छ रखने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

### पर्यावरण बचाकर महिलाओं को आगे बढ़ाए

महिलाएं पर्यावरण के ज्यादा करीब होती हैं। महिला किसी भी उम्र की हो, बीमार हो या गर्भवती, घर के सारे काम वही करती है। चूल्हे के लिए लकड़ी बिनकर लाना, बोझा उठाकर लाना, जानवरों के लिए चारा, पीने का पानी लाना। इन कामों को करने के लिए लड़कियों की पढ़ाई छुड़वाई जाती है जिससे वे अनपढ़ रह जाती हैं, उनका विकास रुक जाता है। उसे शिक्षित करना जरूरी है। जब वह शिक्षित होगी तो उसके पास पर्यावरण को शुद्ध और साफ करने के बारे में जानकारी होगी। इस ज्ञान का उपयोग वह पेड़ लगाने, उसकी देखभाल करने, बचत से ईंधन जलाने, खाना बनाने के लिए सोलर ऊर्जा का उपयोग करने, हवा और पानी को शुद्ध बनाएं रखने में करेगी और कार्बन को कम करने में मदद करेगी। इससे पर्यावरण साफ और शुद्ध होगा। हम सभी स्वस्थ पर्यावरण में साँस ले सकेंगे। महिला पढ़ लिख पाएगी तो उसके विकास के रास्ते भी खुल जाएंगे। महिला बच्चे की पहली शिक्षिका होती है। इसलिए आने वाले बच्चों को भी वह यह सारा ज्ञान दे पाएगी ताकि भविष्य में भी पर्यावरण को साफ और शुद्ध बनाकर रखने में मदद होगी।

सभी मिलजुलकर जलवायु के खतरों से निपटे इसलिए सभी महिला-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ, बच्चे-बड़े, गाँव में हो या शहरों में, भारत में हो या किसी दूसरे देश में, सभी काम करे और जलवायु से होने वाले खतरों से बचें।

### संस्थान के समाचार

#### संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया

5 जून 2009 को बरली संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भूतपूर्व आई. एस. श्री के. परमार ने कहा "बरली संस्थान में जिस तरह से टिकाऊ विकास के लिए पर्यावरण को लेकर व्यवस्थित तरीके से काम हो रहा है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ।" कार्यक्रम की विशेष अतिथि, स्टाफ एकेडमिक कॉलेज देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से श्रीमती जयश्री बंसल ने कहा "हम कोई भी काम करें उसमें लगन, ईमानदारी, मेहनत होनी चाहिए। हमें बच्चों को बचपन से ही पर्यावरण के बारे

में बताना चाहिए। बच्चों को स्कूल, कॉलेज में हमें निबंध या फिर पर्यावरण पर आधारित जानकारी को लिखने को कहना



चाहिए जिससे वे पर्यावरण के बारे में अधिक जान सकें।" डॉ. चन्द्रसेन गंधे ने कहा "पर्यावरण और स्वास्थ्य का बहुत ही गहरा संबंध है। हमें अब जंगल देखने को भी नहीं मिलते। हमने अपनी जरूरत के लिए पेड़ों को काट दिया जिससे वर्षा बहुत ही कम हो रही है। आजकल हमें शहरों में कौआं और चिड़ियां देखने को भी नहीं मिलती हैं।"

अभ्यास मंडल के अध्यक्ष श्री मुकुन्द कुलकर्णी ने कहा "प्लास्टिक को हम खत्म तो नहीं कर सकते पर प्लास्टिक का उपयोग कम कर सकते हैं। जंगल खत्म हो जाएंगे तो सृष्टि भी खत्म हो जाएगी इसलिए हमें पेड़ लगाना चाहिए।" संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने संस्थान का परिचय देते हुए कहा कि पिछले 24 सालों से पर्यावरण के लिए दृढ़ संकल्पित व सजग है। संस्थान में 1992 से पर्यावरण दिवस मनाते आ रहे हैं। इस अवसर पर तीन दिन की कार्यशाला का आयोजन करते हैं और कार्यशाला में संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित मुख्य विषय पर चर्चा की जाती है। उसी विषय पर स्थानीय स्तर पर काम करने के उद्देश्य से प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है। हमें पानी की हर बूंद बचाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए जैसे सब्जी को एक कटोरे में पानी लेकर धोने के बाद उस पानी को पेड़-पौधों और खेत में डालना चाहिए। सब्जियों का बचा कचरा, फलों के छिलके, पेड़ों के सूखे पत्ते व घास आदि से जैविक खाद बनाकर खेतों में उपयोग करना चाहिए। ईश्वर ने पर्यावरण इंसान के विकास के लिए दिया है विनाश के लिए नहीं इसलिए हमारा आध्यात्मिक कर्तव्य कि हम पर्यावरण का विकास करना चाहिए, उपयोग करना चाहिए और पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिए।

संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने कहा महिलाएं लकड़ी लाकर खाना बनाती हैं। धुएं में खाना बनाना भी महिलाओं पर एक प्रकार की हिंसा है जिससे उन्हें बचाना सभी की जिम्मेवारी है। दुनिया के पर्यावरण का आधार सूर्य है। सूर्य हमें ऊर्जा देता है यह ऊर्जा न खत्म होने वाली है। कोयला, पेट्रोल, तेल एक दिन खत्म हो जाएंगे। पर्यावरण

को बचाने के लिए हमें अपने हर रोज के जीवन में सुधार लाना चाहिए। हमें कोई भी काम करने या निर्णय लेने से



पर्यावरण बचाने हेतु बरली संस्थान के प्रयास

पहले यह सोचे कि उसका पर्यावरण पर क्या असर होगा। उन्होंने कहा कि लोग मोबाइल फोन खरीद सकते हैं तो सोलर कुकर भी खरीद सकते हैं।

प्रशिक्षितार्थियों ने अपने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के अनुभव सुनाए। हरदा जिले की नूरी खरत ने कहा "मैंने यहां पर सीखा की हमें प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए। हमें सभी को पेड़ लगाकर उनकी रक्षा करना चाहिए।" धार जिले की गीता अलावा ने कहा "हमें पर्यावरण को बचाकर महिलाओं का विकास करना चाहिए। अगर महिला लकड़ी जलाकर चूल्हे पर खाना बनाती रहेगी तो चूल्हे से निकलने वाले धुएं से उसका स्वास्थ्य खराब हो जाएगा।" आलीराजपुर जिले की कु रूपा नरगांवा ने कहा "मैं अपने गाँव में जाकर बायोगैस या गोबर गैस के उपयोग की जानकारी दूँगी जिससे लकड़ी की बचत होगी।" खरगोन जिले की कु नजमा डावर ने कहा कि "मैं अपने गाँव जाकर सोलर कुकर के उपयोग करने के बारे में बताऊँगी क्योंकि सोलर कुकर से खाना बनाने से लकड़ी, समय और पैसों की बचत होती है। मैं अपने घर सोलर कुकर ले जाऊँगी।" देवास जिले की कु. आशा राठौर ने कहा "हमें सभी को कार्बन कम करने के लिए पेड़ों को नहीं काटना चाहिए क्योंकि पेड़ों से हमें बहुत फायदा होता है।" बिहार की श्रीमती सुजाता ने कहा "हमें त्यौहारों पर साड़ी लेने की बजाय पेड़-पौधे लगाना चाहिए। जलाने में हमें लकड़ी का उपयोग कम करना चाहिए।" कार्यक्रम का संचालन अमृता पाठक ने किया और आभार संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने किया।

### छत्तीसगढ़ में पर्यावरण दिवस मनाया

5 जून 2009 को कांकेर जिले के विस्तार केन्द्र बेवरती व नंदनमारा गाँवों में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। केन्द्र की प्रशिक्षिका श्रीमती मना शर्मा ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए कहा कि विस्तार केन्द्र पिछले 3 सालों से छत्तीसगढ़ के बेवरती, मोहपूर, पैराडाइज स्कूल भण्डारी पारा, इच्छापुर, डोगरीपारा, कोकपुर, बड़ेपारा, आवासपारा,

मुरडोगरी, गोविन्दपुर, नंदनमारा और कांकेर में ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं के विकास व सशक्तिकरण हेतु



कार्यरत हैं।

विस्तार केन्द्र में सभी को विश्व पर्यावरण दिवस पर एस. के. 14 सोलर कुकर की जानकारी दी। इस सोलर कुकर के कई फायदे हैं। लकड़ी, कन्डे जलाने की जरूरत नहीं होती। इससे केवल सूर्य की गर्मी से खाना बनाया जाता है। इस चूल्हे से धुआं नहीं होता है जिससे पर्यावरण पर कोई नुकसान देने वाला असर नहीं होता और न ही खाना बनाने



बेवरती में सोलर कुकिंग

वाले के स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर होता है। इसमें खाना बनते समय दूसरा काम भी कर सकते हैं। इसके उपयोग से जलने, चिपकने का डर नहीं होता, इसे उठाकर एक जगह से दूसरी जगह आसनी से ले जा सकते हैं। इसके उपयोग से समय, लकड़ी व पैसों की बचत होती है और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई नहीं होगी। श्री मोतीराम यादव ने कहा कि आज हमारा पर्यावरण लगातार खराब होते जा रहा है। जिसके जिम्मेदार हम सब हैं। यह भविष्य के लिए खतरनाक है। हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाना चाहिए और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अपना योगदान देना चाहिए। इस अवसर पर श्री धुलजी रावल ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पूरे विश्व में मनाया जाता है। यह सच है कि हमारा पर्यावरण आज कितना दूषित हो रहा है। इस सत्य से हम सभी अनजान बनते जा रहे हैं। छोटी-छोटी बातों में हम लापरवाही करते हैं जैसे की बाजार जाते हैं तो घर से थैला या झोला लेकर नहीं जाते और समान प्लास्टिक की थैलियों

में लेकर आ जाते हैं। उसे लाने पर सुरक्षित नहीं रखते कहीं भी फैंक देते हैं, वह बिखर जाती है। न ही वह सड़ती है और न ही गलती है वह धीरे-धीरे हमारे मिट्टी को बंजर बना देती है, हम पर्यावरण की सुरक्षा का ध्यान नहीं देंगे तो आगे जाकर हमें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव सुनाए कु. ज्योति नेताम ने कहा कि पेड़-पौधों की रक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, इससे हम पर्यावरण को अच्छा बना सकते हैं। कु. सीमा ने बताया कि आसपास की साफ-सफाई रखकर हम पर्यावरण को स्वच्छ बना सकते हैं। इस अवसर पर सभी प्रशिक्षार्थियों ने मिलकर पर्यावरण पर गीत सुनाए। कार्यक्रम का संचालन कु. लता यादव व आभार सरिता यादव ने किया।

### बरली संस्थान की निदेशिका पुरस्कृत

23 जून को रोटरी क्लब ऑफ इंदौर सिटी ने संस्थान की निदेशिका डा. (श्रीमती) जनक मगिलिगन को वर्ष 2008-09 का मानव सेवा पुरस्कार दिया। श्री जिम्मी मगिलिगन को भी उनके सहयोग के लिए सम्मानित किया।



सम्मान पत्र में लिखा है "षांत, गम्भीर और जनसेवा हेतु समर्पित जीवन की धनी महिला का सम्मान करते हुए 'रोटरी क्लब ऑफ सिटी' गौरवान्वित है क्योंकि उन्होंने 'अपने पूरे जीवन को ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए समर्पित किया। यह काम बहुत ही प्रशंसनीय और सराहनीय है। उँची शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को आगे बढ़ाने और उन्हें आत्मनिर्भर व सही जीवन जीने की प्रेरणा दी। ग्रामीण महिलाओं के विकास में ही खुद के विकास की छवि को देखा। बरली संस्थान में महिलाओं को सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जिससे महिलाओं के जीवन में बदलाव आया। समाज सेवा कार्यों से महिलाओं को आर्थिक रूप से भी सशक्त किया, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा, समाज में बराबर के अधिकार मिले, उन्हें आत्मसम्मान से जीने का अवसर मिला और उनकी अपनी सही पहचान करवाई। इसके अलावा उन्होंने लगातार अन्य संस्थाओं को भी परामर्श और महिला सशक्तिकरण के लिए मार्गदर्शन किया।"

### प्रबंधक ने कार्यशाला में भाग लिया

8-10 जून 2009 को भारत सरकार के ऊर्जा मन्त्रालय और टेरी संस्थान के द्वारा नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यशाला में बरली संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य विषय भारत के गाँवों में वहीं से प्राप्त होने वाले साधनों से ऊर्जा तैयार करना था।

### आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों पर एक परामर्श बैठक

4 जून 2009 को भारत सरकार ने आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान करने के लिए बाबा साहब अम्बेडकर संस्थान महू में हुई एक परामर्श बैठक में बरली संस्थान की निदेशिका ने भाग लिया और उन्होंने विशेषतौर पर महिलाओं, अपंग, विधवा व निराश्रित महिलाओं के मुद्दों को शामिल करने के सुझाव दिए।

### इंजनियरों ने सोलर ड्रायर बनाना सीखा

बरली संस्थान में 28 मई से 1 जून 2009 तक महाराष्ट्र के अनाम प्रेम से जुड़े दो इंजनियरों ने सोलर ड्रायर बनाना सीखा। श्री अनूप सामन्त ने कहा "मेरा सबसे अच्छा अनुभव जो रहा वह है सोलर ड्रायर खुद बनाने का। मैंने इस संस्थान में काम करते हुए परिवार जैसा माहौल महसूस किया क्योंकि सभी एक-दूसरे की मदद करते हैं।" श्री धनंजय देसाई ने कहा "आपकी संस्थान में बड़ी दीदी से सीधे मुलाकत की जिससे मैंने संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन के साथ काम करने का मौका मिला यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य था क्योंकि यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा अनुभव रहा है।"

### प्रोफेसरों का समूह संस्थान में

5 जून 2009 को देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के स्टाफ एकेडमिक कॉलेज से 18 प्रोफेसरों का समूह संस्थान में आया और यहाँ पर चल रही गतिविधियों को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए और उनमें से कुछ के अनुभव इस प्रकार हैं। इंदौर की प्रोफेसर सुहासिनी कुलकर्णी ने कहा "संस्थान में सौर ऊर्जा का उपयोग सही तरीके से कर रहे हैं जो पर्यावरण की दृष्टि से बहुत अच्छा है क्योंकि मैं स्वयं भी सोलर कुकर का उपयोग करती हूँ।" धार से आए डॉ. मनोज वानखेड़े ने कहा "महिलाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए किए जा रहे कार्य बहुत सराहनीय हैं।" संधवा के प्रोफेसर प्रकाश सोलंकी ने कहा "लड़कियों और महिलाओं के संपूर्ण विकास के लिए किए जा कार्य बहुत प्रशंसनीय हैं।" मनावर के प्रोफेसर मानसिंह अजनार ने कहा "संस्थान में ग्रामीण महिलाओं को साक्षरता, स्वास्थ्य और सिलाई सिखा रहे हैं यह उनके भविष्य के लिए जरूरी है।" प्रोफेसर सुप्रिया चौहान ने कहा "संस्थान में पर्यावरण दिवस पर बहुत अच्छी उपयोगी जानकारी मिली जिससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली है।"

### महाराष्ट्र से अनाम प्रेम समूह

8 जून 2009 को महाराष्ट्र के अनाम प्रेम समूह से 10 लोगों

का समूह संस्थान देखने आया। उन्होंने संस्थान की सभी गतिविधियों को देखा। प्रशिक्षणार्थियों से चर्चा की और संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक ने चित्रों के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी। श्री वी. नायक ने कहा "संस्थान में किसी भी बेकार चीजों को फेंका नहीं जाता उसे पुनः उपयोग किया जाता है, यह पर्यावरण के लिए बहुत अच्छा काम है। संस्थान में समाज के पिछड़े वर्गों के लिए किए कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है।"

### संस्थान में आए मेहमान

13 जून 2009 को मध्यप्रदेश शासन भोपाल की आदिम जाति कल्याण विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती आई. एम. चहल व उनके साथ इन्दौर से इसी विभाग के श्री



विवेन्द्रसिंह सहायक योजना अधिकारी व श्रीमती विजयालक्ष्मी ठाकुर, सहायक अनुसंधान अधिकारी इंदौर संस्थान देखने आए। उन्होंने संस्थान में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों की पुस्तकों को देखा। यहाँ पर चल रहे प्रशिक्षण को देखकर उन्होंने कहा कि आदिवासी छात्रावासों के अधिकारी व छात्राओं को इस संस्थान में प्रशिक्षण के लिए भेजेंगे। उन्होंने कहा संस्थान द्वारा आदिवासी महिलाओं के विकास के प्रशिक्षण का लाभ शासन को लेना चाहिए।

महाराष्ट्र वर्धा के मग्न संग्राहलय की निदेशिका डा. विभा गुप्ता बरली संस्थान देखने आई और उन्होंने यहाँ विकसित सोलर ओवन, ड्रायर, वाटर डिस्टिलर देखे और उन्होंने सभी उपकरणों का उपयोग देखकर

बहुत प्रभावित हुई और उन्होंने बताया कि उनके क्षेत्र में हजारों महिलाएं व पुरुष, किसान जो जैविक खेती में



सोलर ड्रायर में सूखे सेवफल खाती हुई विभा गुप्ता

लगे हैं वह उन्हें प्रोत्साहित करेंगी ताकि वह अपनी उपज को जब सोलर ड्रायरों से सुखाकर रखेंगे तो उनकी आमदनी बढ़ेगी।

22 जून 2009 को बार्डर सेक्योरिटी फोर्स (बी. एस. एफ.) डिप्टी कमान्डर श्री राजेश दुबे, संस्थान में आए। उन्होंने कहा "मुझे नहीं पता था कि इंदौर जैसे शहर में ऐसी संस्था है जो महिलाओं के विकास के लिए काम कर रही है। आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं।"

27 जून 2009 को डॉ. रविन्द्र कौर कलसी मॉन्टेसरी इन्टरनेशनल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की डायरेक्टर संस्थान देखने आई। उन्होंने कहा "यह कार्य मानवता की सच्ची सेवा है। शिक्षा सभी तरह की प्रगति और विकास का आधार है।"

28 जून 2009 को डॉ. रुमा और अखिलेश शुक्ला इंदौर से संस्थान देखने आए। उन्होंने कहा "आप ग्रामीण महिलाओं के लिए बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं। शिक्षा से ही ये महिलाएं समाज में बदलाव लाएंगी।"

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी  
श्रीमती ढेडी बागदरे व श्री जिम्मी मगिलिगन

### हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान  
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

### प्रिंटेड मैटर-बुक पोस्ट पता

---



---



---



---